नयी कविता —

हिन्दी के आलोचकों में नयी कविता के नामकरण, स्वरूप और विकास को लेकर पर्याप्त भ्रांति है और इस कारण नयी कविता के मूल्यांकन में बाधा पहुँचती है। कुछ आलोचक नयी कविता और प्रयोगवादी काव्य में अन्तर ही नहीं मानते। उदाहरण के लिए डॉ० रामशंकर तिवारी की पुस्तक 'प्रयोगवादी काव्यधारा' में कहा गया — "नयी कविता को प्रयोगवादी कहने में कोई असंगति अथवा अनौचित्य नहीं दिखाई पड़ता या नयी कविता और प्रयोगवाद में कोई सर्वमान्य विभाजक रेखा खींचना संभव नहीं है।" इसी प्रकार श्री सुरेश सहगल ने अपनी पुस्तक 'नयी कविता' और उसका मूल्यांकन' के आमुख में लिखा है — "प्रगतिवाद की परवर्ती इस हिन्दी काव्य धारा के अनेक नामकरण किये गये, जिनमें से 'प्रयोगवाद' को तो आजकल भी कभी-कभी प्रयुक्त किया जाता है। किन्तु आज तो साहित्यिक प्रचलन में 'नयी कविता' ही विशेष रूप से देखा जाता है।" ऐसी ही उक्तियों से नयी कविता का सामान्य विद्यार्थी उलझन में पड़ जाता है।

नयी कविता की प्रवृत्तियों का प्रारम्भ सन 1940 ई० के आसपास मिलने लगता है। छायावाद के परभाव-काल में ही कविता एक नयी दिशा की ओर मुड़ी। छायावाद में जो अतिशय सूक्ष्मता, भावुकता एवं काल्पनिकता का साम्राज्य था उसके प्रति एक तीव्र प्रतिक्रिया हुई। भाषा में सरलता एवं सुबोधता का आग्रह हुआ जिससे नये प्रतीक नव्य तथा संकेतों को प्रश्रय मिला।

नयी कविता का नामकरण → नयी कविता की प्रवृत्तियों का परिचय छायावाद के परभाव-काल से ही मिलने लगता है तथापि 1950 ई० के पूर्व उसके नामकरण की परंपरा नहीं मिलती। ऐतिहासिक दृष्टि से 'नयी कविता' दूसरा सप्तक (1951) के बाद की कविता को कहा जा सकता है। एक विधा के रूप में यह नाम 1954 में डॉ० जगदीश गुप्त के सम्पादन में प्रकाशित 'नयी कविता' नामक पत्रिका से सामने आया। इस पत्रिका में कुल आठ अंक प्रकाशित हुए। इस 'नयी कविता' नाम के

इससे व्यापक नयी कविता जिसमें बाद में नये पत्ते 'कविता' 'धारणा' 'हरिर कौवा' 'निकष एवं कल्पना' के पत्र पत्रिकाओं के द्वारा यह सर्जनात्मक आंदोलन व्यापक होकर समाहित हो गया।।

अब यहाँ यह विचारणीय है कि 'नयी कविता' का नाम 'नयी कविता' ही क्यों पड़ा। पहली बात यह कि नयी कविता के कवि विषय और शिल्प की दृष्टि से यह अनुभव कर रहे थे कि नयी कविता पूर्ववर्ती कवियों की काव्य चेतना से आगे बढ़ चुकी है। दूसरे वे किसी वाद की सीमा में अपने को बाँधने के लिए तैयार नहीं थे। छायावाद की तरह नयी कविता के नामकरण का श्रेय कवियों को ही नहीं, आलोचकों को भी है। 'नयी कविता' के प्रकाशन के पहले ही आलोचकों ने 'नयी कविता' शीर्षक से अनेक निबंध लिखे थे जिससे नयी कविता नाम पड़ गया।

'नयी कविता' का जन्म तत्कालीन विश्व की घटनाओं और उसके परिवेश की संगतता को हुआ है। दो महायुद्धों के बीच पहली बार मानव समाज को निराशा और संत्रास, हिंसा और आत्मपीड़न की स्थिति से गुजरना पड़ा, वह अपने में स्वयं एक अनुभूति की वस्तु है।
भारत में इस [illegible] की लहर 1936 के बाद आयी। हिन्दी की नयी कविता जिसका व्यापक आयोजन अज्ञेय ने 'तार सप्तक' में किया था। यहाँ यह ध्यातव्य है कि जिस प्रकार छायावादी कविता के वैभव काल में पंत 'रूपाभ' के प्रकाशन द्वारा प्रगतिवादी आंदोलन का सूत्रपात कर रहे थे उसी प्रकार निराला 'खजोहरा' 'गर्म पकौड़ी' आदि रचनाओं के माध्यम से 'नयी कविता' का शिलान्यास कर रहे थे। जब कभी हिन्दी की नयी कविता के आंदोलन और गतिशीलता का चित्र सामने आता है तो निराला का वह जीवन्त बिम्ब व्यक्तित्व याद आता है। जिसने मदोन्मत्त दिङ्नाग की तरह वन वीथियों से होकर एक रास्ता खोज निकाला था और जिसके पीछे नयी कविता के दल के दल हरिणशावक चौकड़ी भरते चले [illegible]

2

1937 ई० में लिखी 'ठूँठ' शीर्षक कविता में नयी कविता के शिल्प एवं अभिव्यक्ति का अंदाज प्रदर्शित हो

ठूँठ है यह आज, गयी इसकी कला
गया है सकल साज।
अब यह बसंत से होता नहीं अधीर
पल्लवित झुकता नहीं अब यह धनुष
कुसुम से काम के चलते नहीं हैं तीर
छाँह में बैठते नहीं पथिक आह भर
झरते नहीं यहाँ दो प्रणयियों के नयन नीर
केवल वृद्ध विहग एक बैठता कुछ कर याद।

कविता का शीर्षक स्वयं में प्रतीकवादी शैली का उदाहरण बनकर नयी कविता की भावना के बहुत समीप है। कहने का तात्पर्य यह है कि हिन्दी की नयी कविता पश्चिम के अंधानुकरण की देन नहीं है, इसका समुचित विकास हिन्दी की परम्परागत शैली के अन्तर्गत हुआ। आज भी हिन्दी में नयी कविता प्रस्फुटित होकर काव्य परंपरा में स्थापित है उसका मूल भारतीय जीवन की गहरी विषमता, व्यंग्यात्मकता उसकी आत्मिक छटपटाहट और रचनात्मक युग की तथाकथित [illegible] में [illegible] आधिक [illegible] जिस परिवेश में विदेश में कविता की वैज्ञानिकता से प्रेरित होकर अति बौद्धिक बनाने का प्रयत्न किया था ठीक वैसे ही स्थिति भारतवर्ष की भी है। कविता जीवन से विमुख रहने का स्वप्न देख सकती है पर इस स्थिति में उसकी इन्हीं उँगलियों की पोरों पर ही गिनी जायेगी, उसमें स्थायित्व नहीं हो सकता। नयी कविता के ये परिवर्तित आयाम जो साहित्य के विभाजन और आत्मात्मक जीवन धारा के संक्रमण के प्रतीक रूप में आ रहे हैं, वस्तुतः इस युग की देन हैं जिसके लिए फिर आज के शहरी जीवन में पलती हुई अकुलाती जिन्दगी को परखना होगा। यहाँ प्रकृति दया का नाम है। यहाँ औरतें पुआ देती हैं। नदियों का सबसे बड़ा रूप जल की चोरी है जो समय से बहती है। प्रकृति प्रेम काव्य के फूलों, कपड़े और से [illegible] किया जाता है खातिर की चिड़ियों तथा जानवरों से पूरा किया जाता है।

इस दृष्टि से नयी कविता ने एक बड़ा काम यह किया है कि जहाँ छायावादी कवि कल्पना के अंतर में भटक रहे थे वहाँ नयी कविता हमें यथार्थ की ओर ले आती है। यहाँ न तो कल्पना की [illegible]

Scanned with CamScanner

गया है और न नीचे बोलने का।

नयी कविता के संदर्भ में सामान्यतः कहा जाता है कि उस का परंपरा से कोई सम्बंध नहीं है। गलत धारणा है कि जो लोग ऐसा कहते हैं वे परंपरा को रूढ़ि के अर्थ में लेते हैं किन्तु परंपरा रूढ़ि नहीं है। परंपरा साहित्य के लिए उपयोगी है किन्तु रूढ़ि अवांछनीय है।

नयी कविता में कुछ अंश ऐसा अवश्य है जो परंपरा से अलग है। संभवतः इसी कारण आलोचकों ने इसे अपरंपरावादी कहा है। जहाँ परम्परा रूढ़ि बन जाय वहाँ उससे मुक्ति न मिल सके, वहाँ परंपरा को छोड़कर आगे बढ़ जाना ही उचित है। इसलिए हमारे विचार से नयी कविता में मुक्ति का प्रयास है परंपरा के प्रति अनास्था नहीं, कुछ कवि ऐसे हैं जो फैशन के कारण परंपरा का विरोध करते हैं। इन लोगों के सम्बन्ध में डॉ० राम विलास शर्मा का कहना है — "नयी कविता के ऐसे कवि पाश्चात्य काव्य प्रवृत्तियों के नकलची रहे हैं और इसलिए वे हिन्दी के सहज स्वस्थ सामाजिक काव्य परम्परा में घुल मिल नहीं पाते। ऐसे कवि पाठक के मन में उद्वेग पैदा करते हैं और नयी कविता के स्वरूप को जटिल दुरूह और अस्वाभाविक बना डालते हैं"। इसलिए नयी कविता परंपरा रहित नहीं है उसे रूढ़िमुक्त अवश्य कहा जा सकता है।

यह बात स्मरणीय है कि नयी कविता का नाम आंदोलन प्रयोगवाद से चलकर आज जब लेखन के और प्रतिष्ठित हो रहा है उस पर उसकी पूर्ववर्ती काव्य शैली छायावाद और प्रगतिवाद का गहरा प्रभाव है।

नयी कविता कोई अपरंपरित साहित्यिक आयोजन नहीं है वरन् परंपरा रूप में अंकुरित वह बीज है जो देशकाल और वातावरण से प्रभावित हो निरंतर विकासशील है।

Scanned with CamScanner